CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

शोध-पत्र

Received 08.01.2023 | Reviewed 14.02.2023 | Accepted 27.02.2023

दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप

*** सुजाता रंजन**

मुख्य शब्द - *स्कूल इंटर्नशिप, दो वर्षीय बी.एड., प्रशिक्षु- शिक्षक (इंटर्न) आदि.*

सार

विभिन्न आयोग और समितियों की रिपोर्टों द्वारा हमारे देश में बी.एड. कार्यक्रम की विस्तृत अवधि के लिए बहुत पहले से प्रयास किया जा रहा था लेकिन दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम को 2015 से पूरे भारत में लागू किया गया। एनसीटीई और कुछ प्रासंगिक आयोगों के मानदंडों के अनुसार इसे पुनर्गठित किया गया। इसका उद्देश्य भावी शिक्षकों के बीच अधिक व्यावसायिकता को विकसित करना है, स्कूलों में उनके जुड़ाव के साथ शिक्षण के सिद्धांत और अभ्यास के बीच की खाई को भरना है। इस प्रकार यह उचित शिक्षण के दृष्टिकोण को प्रेरित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। तथापि, इस विस्तारित बी.एड. कार्यक्रम को कम समय में लागू करने से संस्थाओं और छात्रों को अनेक कठिनाइयों और दुविधाओं का सामना करना पड़ा है। इंटर्नशिप कार्यक्रम शिक्षक-प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। इंटर्नशिप चुनौतीपूर्ण होने के कारण इंटर्न के व्यक्तिगत विकास में मदद करता है। इसलिए शोधकर्ता ने वर्तमान पेपर में बी.एड. पाठ्यक्रम में विस्तारित इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान इंटर्न की विभिन्न समस्याओं को पता लगाने का प्रयास किया है तथा उसके आधार पर निष्कर्ष और सुझाव दिये हैं ताकि इंटर्नशिप कार्यक्रम को बेहतर बनाया जा सके।

परिचय

किसी राष्ट्र की गुणवत्ता उसके नागरिकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसके नागरिकों की गुणवत्ता विशेष रूप से उनकी शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, उनकी शिक्षा की गुणवत्ता किसी एक कारक से अधिक उनके शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। (National Policy on Education NPE-1986)

बैचलर ऑफ एजुकेशन(बी.एड.) एक स्नातक पेशेवर डिग्री है जो छात्रों को स्कूलों में एक बेहतर शिक्षक के रूप में काम करने के लिए तैयार करता है। यह पाठ्यक्रम शिक्षण के रूप में कैरियर को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों के लिए है। उच्च प्राथमिक विद्यालयों और उच्च विद्यालयों में पढ़ाने के लिए बी.एड डिग्री अनिवार्य है। बी.एड. कोर्स में प्रवेश के लिए बैचलर ऑफ आर्ट्स (बीए) है, विज्ञान स्नातक (बीएससी) आवश्यक न्यूनतम योग्यता है।

इंटर्नशिप की अवधारणा

- **विस्कॉन्सिन-मैडिसन विश्वविद्यालय (www.wisc.edu/)** के अनुसार, इंटर्नशिप कार्य आधारित सीखने (WBL Work Based Learning) का अनुभव है जिसमें किसी दिए गए क्षेत्र में भविष्य के कैरियर की तैयारी के लिए ऑन-द-स्पॉट प्रशिक्षण दिया जाता

है, उस कार्य के विशेष क्षेत्र से संबंधित कौशल और ज्ञान के विकास पर जोर दिया जाता है। एक प्रशिक्षु होने के नाते उनमें महत्वपूर्ण शिक्षण कौशल विकसित करने की अपेक्षा की जाती है। इंटर्नशिप एक पर्यवेक्षित ऑफ-कैंपस(off campus) काम करने और सीखने का अनुभव है। यह छात्रों को कक्षा में प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान को लागू करने और विस्तारित करने का अवसर प्रदान करता है, साथ ही उन्हें कैरियर का मूल्यांकन करने का अवसर भी प्रदान करता है।

➢ **इंटर्नशिप की आवश्यकता और महत्व**

आचार्य राममूर्ति समिति(1990) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986(National Policy on Education– NPE) की अपनी समीक्षा में कहा कि शिक्षक- प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए एक इंटर्नशिप मॉडल अपनाया जाना चाहिए क्योंकि इंटर्नशिप मॉडल वास्तविक स्थिति में विभिन्न क्षेत्र के अनुभव के प्राथमिक मूल्य पर आधारित होता है। उस अवधि में अभ्यास द्वारा शिक्षण कौशल का विकास होता है।

➢ यशपाल समिति की रिपोर्ट(1993) ने "शिक्षा बिना बोझ के" (Learning Without Burden) सिफारिश की थी। इंटर्नशिप कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं को स्वयं की क्षमता से सीखने और स्वतंत्र सोच हासिल करने में सक्षम बनाने पर जोर दिया जाता है। यह समाजीकरण का समर्थन करता है। इससे उन्हें कक्षा के विभिन्न गतिविधियों का संचालन करने, डिजाइन करने और व्यवस्थित करने में मदद मिलती है (डॉ. कीर्ति मतलीवाला)।

उपरोक्त सभी अवलोकनों से यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि इंटर्नशिप शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। इंटर्नशिप चुनौतीपूर्ण होने के कारण इंटर्न के व्यक्तिगत विकास में मदद करता है। इसलिए शोधकर्ता ने इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षु-शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं को पहचानने और निदान करने की आवश्यकता को महसूस किया।

◆ **अध्ययन का उद्देश्य**

यह अध्ययन विशेष रूप से तैयार किया गया है:

क) इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान उभरने वाली विभिन्न प्रकार की चुनौतियों की पहचान करना।

ख) सभी शैक्षणिक संस्थान जो बी.एड. में प्रशिक्षुओं को इंटर्नशिप करवाते हैं, के लिये इंटर्नशिप कार्यक्रम में सुधार के लिए संभावित उपायों का सुझाव देना।

◆ **इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान इंटर्न की चुनौतियां**

शोधार्थी ने प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित विभिन्न साहित्य की समीक्षा भारतीय एवं विदेशी दो भागो में किया। अध्ययन से पता चलता है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान इंटर्न को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बी.एड. में शिक्षक-प्रशिक्षण का सार अध्यापन-अभ्यास की अवधि में निहित है। अध्ययन के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम की निम्नलिखित कमी के कारण इंटर्न को विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है: -

- स्कूलों में छात्र शिक्षकों के लिए समय सारिणी तैयार नहीं होना,
- शिक्षण अभ्यास के लिए भेजे जाने से पहले छात्र शिक्षकों को शिक्षण के विभिन्न तरीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण नहीं दिया जाना,
- अधिकांश छात्रों को अभ्यास करने वाले स्कूलों के नियमों के बारे में सूचित नहीं किया जाना,
- टीचिंग ऐड(teaching aid) का उपयोग करने में असमर्थ होना,
- छात्र शिक्षकों के लिये आवंटित कक्षाओं की संख्या का कम होना,
- बी.एड. संस्थान से इंटर्नशिप के लिये उचित रूप-रेखा का नही होना,
- सुपरवाइजर द्वारा निर्देश नही मिलना,
- इंटर्न ग्रूप्स में आपसी सहयोग का अभाव होना,
- को करिकुलर अक्टिविटिज करवाने में समस्या ,

- लेसन प्लान बनाने में समस्या ,

इस तरह से कहा जा सकता है कि प्रशिक्षुओं को बी.एड. के दौरान इंटर्नशिप में पर्यवेक्षक, आवंटित स्कूल (स्कूल स्टाफ, छात्र, निर्धारित कक्षा), पाठ योजना से स्मबंधित चुनौतियों का सामना करना पडा I

◆ **सुझाव**

पूरे भारत में, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को एनसीटीई नियमों के अनुसार इंटर्नशिप कार्य को लागू करने की आवश्यकता है। वर्क बेस्ड लर्निंग(WBL) यानी इंटर्नशिप को सफल तरीके से कार्यान्वयन के लिए निम्नलिखित बिंदु पर ध्यान जरूरी है: -

- इंटर्नशिप की तैयारी 3 फेज में होनी चाहिए: -

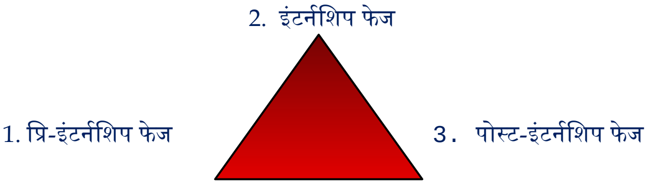

1. **<u>प्रि इंटर्नशिप फेज (</u>**इंटर्नशिप शुरू करने से पहले- प्लानिंग फेज)

- स्कूलों में इंटर्नशिप कार्य के संचालन के लिए स्कूलों से अनुमति प्राप्त करना क्योंकि कुछ निजी स्कूल अभ्यास शिक्षण सत्र के दौरान लम्बी अवधि के लिये कक्षाओं का संचालन इंटर्न के हाथ में देने के लिए अनिच्छुक होते हैं। उनका मानना है कि इंटर्नशिप से स्कूल में अनुशासन हीनता आती है। पाठ्यक्रम समय पर पूरा नहीं हो पाता है। सामान्य कक्षाएं, स्कूल की परीक्षा आदि प्रभावित होती है। इसलिए छात्र-शिक्षकों को आवंटित कक्षाओं की संख्या कम दी जाती है जो उचित नहीं है। अगर यही स्थिति रही तो इंटर्नशिप सिर्फ नाम के लिए होगा।
- इंटर्नशिप से सम्बंधित लिखित गाईड्लाईन स्कूलों तथा इंटर्न को देना होगा ताकि इंटर्नशिप कार्य का संचालन सही तरिके से किया जा सके।
- प्रशिक्षुओं को इंटर्नशिप कार्यक्रम के संबंध में प्रासंगिक अभिविन्यास(Relevant orientation regarding internship programme) प्रदान किया जाना चाहिए।
- पर्यवेक्षकों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए।
- इंटर्न को आवश्यक कौशल(स्किल्स) सिखा दिया जाना चाहिए।
- इंटर्न को पहले से पाठ योजना के लिए व्यावहारिक रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए और उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग करने की अनुमति दी जानी चाहिए।
- प्रशिक्षुओं को आत्मविश्वासी और अनुभवी बनाने के लिए इंटर्नशिप आयोजित करने से पहले सिमुलेशन शिक्षण का कार्यान्वयन किया जाना चाहिए।
- शिक्षक शिक्षा संस्थान द्वारा बाधाओं को दूर करने के लिए तथा सफल इंटर्नशिप कार्यक्रम के लिए पर्याप्त योजना और रणनीति तैयार की जानी चाहिए।
- इंटर्नशिप के लिये स्कूल अलाट्मेंट लेटर जारी किया जाना चाहिए।

2. इंटर्नशिप फेज (इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान- एक्टीव फेज)

- इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान उनके सामने आने वाली बाधाओं को समझने के लिए संकाय सदस्यों और प्रशिक्षुओं के बीच उचित संचार और बातचीत विकसित की जानी चाहिए।
- स्कूल को उचित समय सारणी इंटर्न के लिये तैयार करना चाहिए।
- जरूरी सूचना के लिये नोटीस बोर्ड का भी सहारा लिया जाना चाहिए।

- इंटर्नशिप से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए इंटर्न को काउंसलर, सुपरवाइजर और एडमिनिस्ट्रेटर द्वारा उचित मार्गदर्शन और परामर्श दिया जाना चाहिए। इंटर्नशिप के दौरान चुनौतियों का सामना करने वाले प्रशिक्षुओं को उपचारात्मक निर्देश दिए जाने चाहिए।
- इंटर्नशिप के दौरान किसी भी टीचिंग या नॉन टीचिंग स्टाफ द्वारा इंटर्न को शोषण से बचाने के लिए कानून बनाया जाना चाहिए।

3. पोस्ट इंटर्नशिप फेज (इंटर्नशिप समाप्त होने पर- एक्स्पेरियंस फेज)

- इंटर्नशिप रिपोर्ट तैयार करना।
- इंटर्नशिप को अधिक प्रभावी बनाने के लिए फीडबैक एकत्र कर एक्शन रिसर्च करने का प्रावधान होना चाहिए।
- इंटर्नशिप समाप्त होने पर अनुभव प्रमाण पत्र देना चाहिए।

अन्य सुझाव-

- एक इंटर्नशिप पोर्टल विकसित की जानी चाहिए।
- ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनो मोड मे इंटर्नशिप करवाया जाना चाहिए।
- ऑनलाइन मोड मे इंटर्नशिप करवाने के लिये एक बेहतर सिस्टम का विकास किया जाना चाहिए।
- हेल्प एड सपोर्ट के लिये टॉल फ्री नम्बर होना चाहिए।
- इंटर्नशिप के लिये यात्रा भत्ता दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बी.एड. इंटर्नशिप प्रि-सर्विस तथा इन-सर्विस के बीच का ब्रिज है जो टीचिंग फिल्ड के अनेको अनुभव प्रदान करता है। इंटर्नशिप कार्यक्रम से संबंधित समस्याओं का हल करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए। प्रासंगिक रणनीतियां तैयार की जानी चाहिए और इन समस्याओं से निपटने के लिए छात्र-शिक्षकों को परामर्श दिया जाना चाहिए। **3 टायर इंटर्नशिप मॉडल** को ध्यान मे रखते हुए इंटर्नशिप कार्यक्रम को और भी बेहतर किया जा सकता है।

निजी और सरकारी बी.एड. संस्थानों को मिलकर योजनाएं बनानी चाहिए ताकि अगले सत्र के इंटर्नशिप के लिये बेहतर कदम उठाया जा सके। विभिन्न कार्यशालाएं/ सम्मेलन/ सेमिनार शिक्षक-शिक्षकों और प्रशासकों के लिए आयोजित किया जाना चाहिए ताकि इस विस्तारित बी.एड. कार्यक्रम को बेहतर तरीके से लागू किया जा सके। परिवर्तन के लिए समय की आवश्यकता होती है, बेहतर रणनीतियां अपनाकर भविष्य में यह परिवर्तन बेहतर ढंग से लागू किया जा सकता है।

संदर्भ

1. जोगन सु. एन. (2019) "एक स्कूल इंटर्नशिप की प्रभावशीलता का मूल्यांकन" *इंटरनेशनल जर्नल फॉर सोशल स्टडीज* https://pen2print.org/index.php/ijss/ आईएसएसएन: 2455-3220 वॉल्यूम 05 अंक 02 फरवरी 2019 पी ए जी ई | 227
2. टेलर, एम.एस. (1998)। व्यक्तिगत प्रतिभागियों में कॉलेज इंटर्नशिप के प्रभाव। एप्लाइड साइकोलॉजी जर्नल, 73, 393-492। वेंकटैया, एन. (2009)। शिक्षक शिक्षा, नई दिल्ली: ए पी एच प्रकाशन निगम।
3. पटेल, आर.आर. (सितंबर 2019) बी.एड की धारणाएं और अनुभव।इंटर्नशिप और सेशनल वर्क के बारे में छात्र, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च (आईजेएसआर) आईएसएसएन: 2319-7064 खंड 8 अंक 9,
4. परवीन, सा. और मिर्जा नि.(2012), "शिक्षा में इंटर्नशिप कार्यक्रम: प्रभावशीलता, समस्याएं और संभावनाएं" *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट* आईएसएसएन 2164-4063 2012, वॉल्यूम2, नंबर 1 http://dx.doi.org/10.5296/ijld.v2i1.1471
5. भार्गव, ए. (2009) बी.एड प्रोग्राम के छात्र शिक्षकों के लिए शिक्षण अभ्यास :मुद्दे, दुर्दशा और सुझाव। *दूरस्थ शिक्षा के तुर्की ऑनलाइन जर्नल।* 2(3), 101-108.

6. महाजन, अ. और राणा सु. (2017)"दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के दौरान छात्र-शिक्षकों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएं", *इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च के इंटरनेशनल जर्नल* (www.jetir.org), आईएसएसएन: 2349-5162, वॉल्यूम 4, अंक 11, पृष्ठ संख्या 202 -203,नवंबर-2017, http://www.jetir.org/papers/JETIR1711038

7. मिर्जा, एस., (2012) शिक्षा में इंटर्नशिप कार्यक्रम: प्रभावशीलता, समस्याएं और संभावनाएं, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट आईएसएसएन* 2164-4063 2012, वॉल्यूम। 2, नंबर 1

8. वंदना एस. नलवाडे - जाधव, (2015) "दो वर्षीय बी.एड. कोर्स: आवश्यकताएं, बाधाएं और समाधान, "

9. स्कूल इंटर्नशिप: फ्रेमवर्क और दिशानिर्देश, राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, हंस भवन (विंग-II), 1, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली, 2016, 110002 www.ncte-india.org द्वारा शर्मा, आर. (संपादक)।

10. स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण: परिभाषा, विधि और उदाहरण | प्रश्न प्रो

वेबसाइटे

11. http://www.academia.edu/4564980/Sample_Internship_Report_useful_for_M.Ed._Students

Corresponding Author
*** सुजाता रंजन**, शोधार्थी
शिक्षा विभाग, मगध विश्वविद्यालय
बोध गया, गया, बिहार
Email- sujatar607@gmail.com, Mobile-7762820071